वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के रूप में द्रव्य विचार

अनुमान के द्वारा होता है।

सभी भौतिक द्रव्यों का अस्तित्व 'दिक्' और 'काल' में होता है। दिक् और काल के बिना भौतिक द्रव्यों की व्याख्या असंभव है। इसलिए वैशेषिक ने दिक् और काल को द्रव्य के रूप में स्वीकारा है।

<u>दिक् और काल</u> :- दिक् संसार की सभी वस्तुओं को आश्रय प्रदान करता है। यदि दिक् न होता तो संसार की विभिन्न वस्तुएँ एक दूसरे के अन्दर प्रविष्ट कर जाती। दिक् अदृश्य है। इसका ज्ञान अनुमान से होता है। पूर्व और पश्चिम, निकट और दूर इत्यादि प्रत्ययों का आधार दिक् है। दिक् सर्व-व्यापक, नित्य और विशेष गुण से हीन है। दिक् एक है फिर भी दैनिक जीवन में एक स्थान और दूसरे स्थान, पूर्व और पश्चिम दिक् के औपाधिक भेद है।

काल भी एक द्रव्य है। यह दिक् की तरह ही नित्य, सर्वव्यापी और अभौतिक है। यह अविभाज्य है किन्तु हम सहूलियत के अनुसार इसे अब-तब, दिन-रात, वर्ष, मास, घंटे, मिनट, भूत, वर्तमान, भविष्य में विभक्त कर देते हैं। दिक् काल से भिन्न है क्योंकि दिक् का विस्तार होता है जबकि काल विस्तारहीन होता है।

<u>मन</u> :- मन एक आन्तरिक इन्द्रिय है। यह अणु रूप है। यह निरवयव है। इसे ध्यान केन्द्रित करने वाला अंग भी कहा गया है। वैशेषिक दर्शन में मन को स्वतन्त्र द्रव्य मानने के दो कारण है।

(क) जिस प्रकार बाह्य पदार्थों की जानकारी के लिए बाह्य इन्द्रियों की आवश्यकता पड़ती है। उसी प्रकार आन्तरिक अनुभूतियों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी एक ~~आन्तरिक~~ आन्तरिक इन्द्रिय की आवश्यकता होती है वह आन्तरिक इन्द्रिय मन है।

(ख) हमें ज्ञान उसी वस्तु का होता है ~~जिस~~ जिसका संयोग इन्द्रियों से हो और उस पर हमारा ध्यान केन्द्रित हो। क्या ध्यान केन्द्रित करनेवाला भी कोई इन्द्रिय है? वैशेषिक का कहना है कि ऐसा अंग या इन्द्रिय अवश्य है और वह है मन। इसके द्वारा सुख, दु:ख, हर्ष, आदि आन्तरिक

अनुभूतियों का ज्ञान होता है। मन अविभाज्य है।

आत्मा :- वैशेषिक दर्शन में चेतना को आत्मा का आकस्मिक गुण माना गया है न कि आवश्यक गुण। आत्मा जब शरीर धारण करती है तब उसमें चेतना का उदय होता है। शरीर धारण करने के पूर्व यह अचेत रहती है। कणाद के अनुसार मोक्ष की अवस्था में भी आत्मा अचेत हो जाती है। सांख्य, वेदान्त चेतना को आत्मा का स्वाभाविक एवं आवश्यक गुण मानते हैं। वैशेषिक दर्शन में आत्मा के दो प्रकार बताये गये हैं (i) जीवात्मा (ii) परमात्मा।

(i) **जीवात्मा** :- वैशेषिक के अनुसार ज्ञान, सुख, दुःख इच्छा, धर्म, अधर्म, इत्यादि आत्मा के विशेष गुण हैं। जीवात्मा अनेक हैं। जितने शरीर हैं, उतनी ही जीवात्मा होती है। प्रत्येक जीवात्मा में मन का निवास होता है जिसके कारण इनकी विशिष्टता विद्यमान रहती है। वैशेषिक ने आत्मा को अमर माना है। यह अनादि और अनन्त है। आत्मा को सिद्ध करने के लिए वैशेषिक निम्न युक्तियों का उपयोग करते हैं :-

(1) प्रत्येक गुण का कुछ न कुछ आधार होता है। चैतन्य एक गुण है। इस गुण का आश्रय शरीर, मन और इन्द्रिय नहीं हो सकती। अतः इस गुण का आश्रय आत्मा है। चैतन्य आत्मा का स्वरूप गुण नहीं अपितु उसका आगन्तुक गुण है।

(2) जिस प्रकार कुल्हाड़ी का व्यवहार करने के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आँख, नाक, कान, आदि विभिन्न इन्द्रियों का उपयोग करने वाला भी कोई होना चाहिए वही आत्मा है।

(3) प्रत्येक व्यक्ति को सुख, दुःख की अनुभूति होती है। इससे सिद्ध होता है कि सुख, दुःख पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, दिक, काल के गुण नहीं हैं। अतः सुख-दुःख आत्मा के ही विशेष गुण हैं।

(4) नवजात शिशु जन्म के साथ ही हँसता और रोता है। नवजात